Vijay Kumar Jha
Asso prof.
Deptt in History.
V.S.J. college Rajnagar.

Degree part III.

Paper - VIth.

Land revenue System under Mughals.

मुगल काल में राज्य कि आय का मुख्य साधन कृषि था। बाबर एवं हुमायु ने सल्तनतकालीन मालगुजारी व्यवस्था को ही जारी रखा। शेरशाह ने मालगुजारी प्रथा को सुव्यवस्थित करने का प्रयास किया। अकबर ने शेरशाह के मालगुजारी व्यवस्था को अपनाया किन्तु उसमें कुछ सुधार किया। शेरशाह ने उपज का $\frac{1}{3}$ भाग मालगुजारी के रूप में तय किया था। अकबर ने 1560 ई० से 1580 ई० के अवधि में राजस्व विभाग में अनेक विशेषज्ञों कि नियुक्ति किया। बाबर एवं हुमायु ने युद्धों में बराबर व्यस्त रहा अतः इस ओर कोई ध्यान नहीं दिया। मुगलकाल में अकबर प्रथम सम्राट था जिसने राजस्व व्यवस्था को सुनियोजित करने का प्रयास किया।

अकबर द्वारा काफी मन्थन के बाद जागीरों कि भूमि को खालसा भूमि में परिवर्तित कर दिया और समस्त भूमि को 182 कोटों में बांटा। चूंकि इसमें एक करोड़ राजस्व वसूलने का लक्ष्य बनाया गया अतः इस राजस्व को वसूलने के लिये करोडी नामक अधिकारी रखा। इसके मदद के लिये कारकुन एवं फोतेदार नियुक्त किये गये। करोड़ी का मुख्य काम वसूल गये राजस्व को शाही खजाने में जमा करना था।

अकबर ने राजस्व में सुधार के लिये दहसाला व्यवस्था लागू किया इसका अर्थ प्रथम दस वर्षों के मूल्यों का औसत निकाल-कर लगान निश्चित करना था। परगना को एक इकाई माना गया तथा दस्तूर के आधार पर मूल्य निकाला जाता था। दहसाला व्यवस्था परिवर्तनशील था। मालगुजारी नगदी वसूले जाते थे जो उपज के $\frac{1}{3}$ भाग होते थे। प्रान्तों में प्रान्तीय राजस्व अधिकारियों को दिवान कहा जाने लगा। भ्रष्ट अधिकारियों को दण्डित करने कि नीति अपनाई गई

अकबर ने भूमि कि उर्वरता के अनुसार भूमि को चार भागों में (1) पोलज — उत्तम श्रेणी, एक-तिहाई श्रेणी (2) परौती — उत्तम श्रेणी एक तिहाई श्रेणी, (3) चाचर, (4) बंजर। सभी भूमि की औसत निकाली गयी जिसमें सिंचाई व्यवस्था का भी ध्यान रखा गया। मालगुजारी कि तीन व्यवस्थायें बनाई गई (क) गल्ला बख्शी – फसल का कुछ भाग सरकार लेती थी (ख) नस्क भूस्वामी एवं सरकार के बीच लगान का समझौता होता था, (ग) जब्ती — जिस प्रकार कि फसल बोया जाता था उसी के अनुरूप लगान निश्चित होता था किसान इन तीनों में से एक प्रणाली अपनाने के स्वतंत्र थे। टोडरमल ने राजस्व वसूली के लिये दसवर्षीय बन्दोबस्त प्रणाली चलाया। कृषक नगद या उपज के रूप में कर अदा कर सकते थे।

अगर राजस्व कर्मचारी निर्धारित दर से अधिक धनराशि किसानों से वसूलता था तो उन्हें दण्डित किया जाता था। राजस्व अधिकारी कि सहायता के लिये एक लिपिक होते थे। गरीब कृषकों को ऋण देने कि व्यवस्था थी जो किस्त में चुकानी होती थी। राजस्व कर्मचारियों के नई दर से वेतन दिया जाता था। एक रुपया 40 दाम के बराबर होता था। जमीन मापी के लिये अमीन होते थे जिसमें रबी कि फसल कि जमीन 250 बीघा प्रतिदिन तथा खरीफ जमीन 200 बीघा प्रतिदिन मापी करनी पड़ती थी। लगान में कई सुधार के बावजूद अकबर के काल में किसान प्रसन्न नहीं थे। हलांकि अकबर ने जजिया, जकात, तीर्थ यात्रा कर आदि माफ कर दिया था। इस व्यवस्था से राजकीय आय में वृद्धि हुई। अकबर कि ये व्यवस्था जहांगीर काल में कायम नहीं रह सका।

जहांगीर काल में लगान व्यवस्था अकबर काल कि तरह ही कायम रहा किन्तु प्रबन्धन में शिथिलता आयी। जहांगीर के काल में दसशाला व्यवस्था समाप्त हो गया तथा ये काम ठेकेदारों को सुपुर्द कर दिया गया। जिससे नाजायज तरीकों से लगान वसूले जाने लगें। जिससे किसानों कि दशा शोचनीय हो गये।

शाहजहां के काल में भू राजस्व व्यवस्था निम्न थे —

(1) लगान ठेकेदारों द्वारा वसूले जाते थे जिससे किसानों का शोषण होता था।

(2) राज्य कि 70% भूमि जागीरदारों को दे दिया गया था और राज्य का सम्पर्क जागीरदारी भूमि के किसानों का न रहा।

(3) शाहजहां ने भूमि कर का दर अधिक बढ़ा दिया जो

JUNE 2019

Su	Mo	Tu	We	Th	Fr	Sa
30						1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29

Scanned with CamScanner

Monday और 33% से 50% तक चला गया। कई जगह पैदावार का आधा भाग लगान के रूप में लिया जाता था। इसके अतिरिक्त किसानों को अपनी सम्पूर्ण भूमि पर लगान देना पड़ता था चाहे उस भूमि पर खेती हो या न हो।

औरंगजेब के शासन काल में वे सारी खोज थी जो शाहजहाँ के शासन काल में था। जागीरदारी व्यवस्था, ठेका व्यवस्था प्रचलित था लगान $\frac{1}{3}$ से लेकर $\frac{1}{2}$ भाग या इससे भी अधिक दर पर लगान वसूला जाता था। किसानों से सम्पूर्ण भूमि पर लगान वसूलना आम बात बन गई थी जिससे किसानों कि आर्थिक स्थिति दयनीय हो गई थी और किसान नाराज हो गये थे।

उत्तरकालीन मुगल सम्राटों के समय में भी भू राजस्व व्यवस्था पूर्णतः समाप्त हो गई तथा भूमि ठेकेदारों के जिम्मे चला गया। सरकार इन ठेकेदारों से अधिक से अधिक धन कि मांग करती थी तथा ठेकेदार किसानों से अधिक से अधिक धन वसूलते थे। इससे किसानों कि दशा और भी दयनीय हो गई थी और राज्य का आर्थिक ढांचा नष्ट हो गया था। उत्तरकालीन मुगल सम्राट न तो कुशलतापूर्वक प्रशासन का संचालन सही ढंग से नहीं कर सका और न अपनी सेना को ही समय पर उचित वेतन दे सका जिससे सेना और किसान दोनों ही नाराज हो गये।

इस प्रकार बाबर द्वारा स्थापित मुगल साम्राज्य में सिर्फ अकबर ने ही भू राजस्व प्रणाली में सुधार करने का प्रयत्न किया और वह कुछ अंश तक सफल भी हुये। किंतु उनके उत्तराधिकारी ने अकबर द्वारा लगान प्रणाली को कायम नहीं रख सके जिससे आर्थिक निष्क्रियता आ गई और किसान खेती से विमुख होने लगे। परिणामतः उपज में कमी आयी और फलस्वरूप लगान पर असर पड़ा और राजकोष खाली हो गये।